आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2528 • उदयपुर, शुक्रवार 26 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

दिव्यांगों के जीवन को सरल और सुचारु बनाएं

शारीरिक दृष्टि से अक्षम (दिव्यांग) व्यक्तियों के पुर्नवास एवं विकास को लेकर प्रतिवर्ष 3 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकलांग दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1992 से संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर हुई थी। भारत के प्रधानमंत्री ने इसे दिव्यांग दिवस का सम्बोधन प्रदान किया। इसका उद्देश्य दिव्यांगों के जीवन को बेहतर और स्वावलंबी बनाना है।

पूरी दुनिया के 15 प्रतिशत लोग विकलांगता से ग्रस्त है। जिन्हें रोजमर्रा की जिंदगी में अनेक कठिनाइयों का सामना करना और इनके समग्र विकास के साथ इनके अधिकारों की रक्षा करना है। निःशक्तजन से भेदभाव करने पर दो साल तक की कैद और अधिकतम 5 लाख रुपए के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। जहां तक भारत का सवाल है यहां की आबादी का 2.2 प्रतिशत हिस्सा दिव्यांग है। भारत सरकार ने इनके विकास के लिए सरकारी नौकरियों व अन्य संस्थानों में 3 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान को बढ़ाकर 4 प्रतिशत कर दिया है। दिव्यांग शारीरिक दृष्टि से भले ही अक्षम हो लेकिन उनमें कुदरत कुछ ऐसी प्रतिभा का रोपण कर देती है जिससे वे दुनियाभर में अपने कौशल का योगदान सुनिश्चित कर प्रतिष्ठा अर्जित करते हैं। ऐसे कुछ व्यक्तियों में गायक और संगीतकार रवीन्द्र जैन, नृत्यांगना सोनल मानसिंह, नृत्यांगना सुधाचंद्रन, पहली एवरेस्ट विजेता दिव्यांग महिला अरुणिमा सिन्हा, क्रिकेटर एस चंद्रशेखर, पैरालिपक स्वर्ण विजेता अवनि लेखरा, रजत पदक विजेता देवेन्द्र झाझड़िया, दीप मलिक का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने अपने आपको सिद्ध किया है। ऐसी अनेक और भी जानी मानी हस्तियां हैं, जिन्होंने अपनी दिव्यांगता को व्यक्तित्व निर्माण में आड़े नहीं आने दिया।

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान भी आपके सहयोग और दिव्यांगों की निःशुल्क सेवा, चिकित्सा, शिक्षण–प्रशिक्षण एवं पुनर्वास के क्षेत्र में पूरे समर्पण के साथ संलग्न है। विकलांगता दिवस पर हमें इस बात की शपथ लेनी है कि दिव्यांगों बंधु–बहनों के जीवन को सरल और सुचारू बनाने में हम अपनी सामर्थ्य के साथ अपना योगदान सुनिश्चित करेंगे।

बीदर (कर्नाटक) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 21नवम्बर 2021 को नारायण सेवा संस्थान के पन्नालाल हिरालाल कॉलेज परिसर, बीदर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता श्री भगवत जी खुबा (रसायन उर्वरक राज्य मंत्री, भारत सरकार) द्वारा शिविर में 225 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 25, कैलीपर्स माप 12, ट्राईसाईकल 15, व्हीलचेयर 05, वैशाखी 25 जोड़ी तथा ऑपरेशन चयन 08 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री भगवत जी खुबा (रसायन एवं उर्वरक तथा नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा राज्य मंत्री, भारत सरकार), अध्यक्षता श्री राजकुमार जी अग्रवाल (उघोगपति एवं समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि ब्रिजकिशोर जी, श्री आर. जी. अग्रवाल, श्री सत्यभूषण जी जैन (उघोगपति एवं समाजसेवी), शिविर कोडिनेटर बीदर, श्री नाथुसिंह जी (टेक्नीशियन), डॉ. अजमुदीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), शिविर टीम श्री हरिप्रसाद जी लड्डा (शिविर प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर, श्री महेन्द्र सिंह जी रावत सहायक ने भी सेवायें दी।

आदिवासी क्षेत्र में वस्त्र वितरण सेवा

प्राणिमात्र की सेवा में जुटी मानव कमल कैलाश सेवा संस्थान एवं नारायण सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में को गिर्वा पंचायत समिति के खेजड़ा ग्राम में निःशुल्क वस्त्र वितरण शिविर हुआ।

संस्थापक चेयरमैन कैलाश जी 'मानव' एवं कोषाध्यक्ष कमलादेवी जी अग्रवाल के सान्निध्य में 150 आदिवासी महिलाओं को राजस्थानी पोशाक घाघरा– ओढ़नी, 50 बच्चों को पेंट–शर्ट और 160 जरूरतमंदों को चद्दर बांटे गए। शिविर में साधना जी अग्रवाल, कुलदीप सिंह जी, शांतादेवी जी, सुकांत जी, शांतिलाल जी, राजेन्द्र जी वैष्णव ने आदि सेवाएं दी।

यह ज्ञातव्य है कि नारायण सेवा संस्थान की प्रेरणा से ही मानव कमल सेवा संस्थान ने अनेक सेवा कार्य आदिवासी क्षेत्र व जरूरतमंदों के लिये प्रारंभ किये हैं।

अंधेरे से उबरा संदीप

पुत्र के जन्म पर परिवार और सगे–संबंधियों में खुशी की लहर थी। लेकिन यह खुशी तब दुःख में तब्दील हो गई, जब पता चला कि बच्चा जन्म से ही पोलियो का शिकार है। इसके दोनों पांव कमजोर, टेढ़े और घुटनों के पास सटे हुए थे। आस–पास के अस्पतालों में भी दिखाया और उपचार भी हुआ लेकिन कोई लाभ न मिला। किसी बड़े अस्पताल में जाना गरीबी के कारण संभव भी नहीं था। यह त्रासदायी दास्तान है बिहार के पश्चिमी चमपारण जिले के गांव मगरोहा में रहने वाले पिता सुनील कुमार की। बालक संदीप जन्मजात दिव्यांगता के दुःख को लेकर उम्र के सोपान चढ़ता हुआ चौदह बरस का हो गया। माता–पिता ने गोदी में उठाकर उसे दूसरी कक्षा तक पढ़ाई कराई लेकिन बच्चे के आगे का भविष्य गरीबी और दिव्यांगता के कारण उन्हें अंधेरे में ही दिखाई देता था।

माता–पिता दिहाड़ी मजदूर हैं और बच्चे–बच्चियों सहित पांच सदस्यों के परिवार का पोषण करते है। एक दिन उन्हें किसी रिश्तेदार ने सलाह दी की वे बच्चे को राजस्थान के उदयपुर शहर स्थित नारायण सेवा संस्थान में लेकर जाए, जहां इस तरह की बीमारी के निःशुल्क ऑपरेशन होते हैं। उसने इन्हें ये भी बताया कि वह खुद भी इस बीमारी का शिकार था। वहां जाने के बाद अब चलता हूं और अपने दैनन्दिन काम भी बिना सहारे आसानी से कर लेता हूं। सुनील बताते हैं कि वे बच्चे को लेकर 2018 में संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उनकी जांच कर बच्चे के पांव का पहला ऑपरेशन किया। इसके बाद 15 सितम्बर, 2021 के बीच कुल 4 ऑपरेशन हुए। संदीप अब पहले से ज्यादा खुश रहता है और चलता भी है। माता–पिता अपने सिर का बोझ हल्का करने के लिए संस्थान का बारम्बार आभार जताते हैं।

अंतहीन संभावनायें – दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्नआयाम
WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.....

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

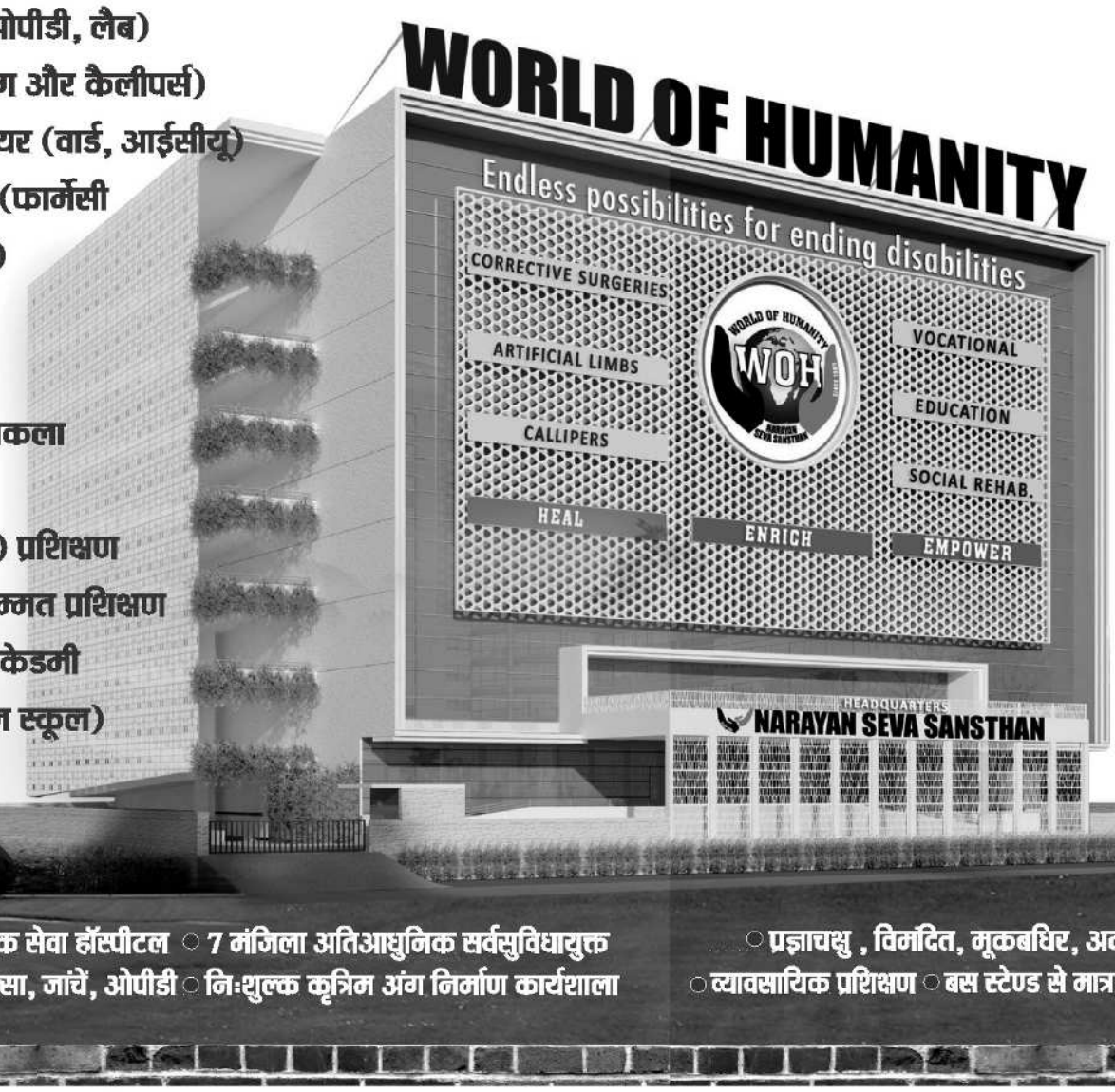

सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

○ 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त ○ निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ○ निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला

○ प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय ○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

भक्ति में भाव सर्वोपरि

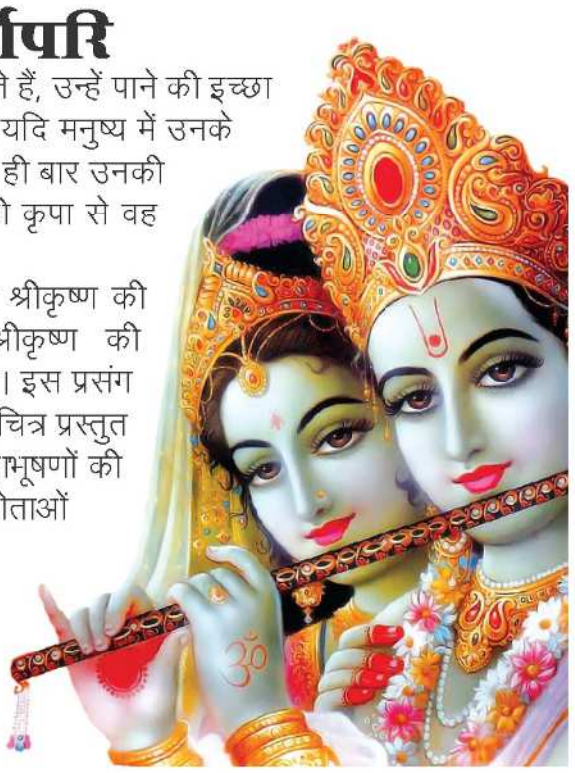

भगवान हमेशा भाव को ग्रहण करते हैं, उन्हें पाने की इच्छा मात्र से ही विकार स्वतः मिट जाते हैं। यदि मनुष्य में उनके प्रति व्याकुलता नहीं है तो चाहे कितनी ही बार उनकी लीला–कथाएं सुने, लेकिन भगवान की कृपा से वह वंचित ही रहेगा।

पंडित जी किसी गांव में भगवान श्रीकृष्ण की कथा सुना रहे थे। प्रसंग था–गोपाल श्रीकृष्ण की बाल लीलाएं और उनके जीवन आदर्श। इस प्रसंग में उन्होंने श्रीकृष्ण का बहुत सुन्दर भावचित्र प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने अनेक विलक्षण आभूषणों की भी चर्चा की। कथा सुन रहे असंख्य श्रोताओं में एक डाकू भी था। कथा समापन के बाद पंडित जी अपनी पोथी और भक्तों द्वारा आई भेंट को एक गठरी में बांधा और अपने गांव की ओर चल पड़े। डाकू भी उनके पीछे हो लिया। कुछ दूर जाने पर डाकू ने पंडित जी को रूकने के लिए कहा, वे रूक गए। उसने पंडित जी कहा, 'मैं चोर–डाकू हूं। आपने कथा में जिस गोपाल और उसके आभूषणों का वर्णन किया है, क्या आप उसे जानते है? 'यदि जानते है तो बताइए, अन्यथा मैं आपका सामान लूट लूंगा।' पंडित जी ने कहा, 'मैं उनका पता जरूर बताउंगा, लेकिन इससे पहले यह गठरी मेरे घर तक ले चलो।' पंडित जी ने कथा की पोथी और भेंट सामग्री की गठरी उसके सर पर दी।

पंडित जी ने घर पहुंचने के बाद उससे कहा कि गोपाल मथुरा और वृदावन में रहते है। वहीं जाकर तुम्हें उन्हें खोजना होगा। डाकू मथुरा–वृदावन के लिए रवाना हुआ। उसने वहां गोपाल को खोजा लेकिन वह नहीं मिला। भूखे–प्यासे रहकर भी उसने खोज जारी रखी।

एक दिन उसे एक सुंदर नन्हा सा बालक कुछ गायों को चराता हुआ दिखा। उसकी मनमोहक छवि पर डाकू इतना मोहित हो गया कि वह उसे एकटक उसे देखता रहा। यही बालक श्रीकृष्ण थे, जिन्होंने अपने प्रति डाकू के भाव देखकर उसे दर्शन दिए। वह उस बालक से बोला, 'मैं इस छवि को हमेशा देखना चाहता हूं। बालक ने कहा, 'जैसी तुम्हारी इच्छा।' उस दिन के बाद यकायक डाकू का हृदय परिवर्तन हो गया और वह कृष्णभक्त बन गया मृत्युपरांत परमधाम को प्राप्त हुआ।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

राम राम साहब, जय भारत माता की। मैं जब आ रहा था मेरा एक बच्चा बोला पापा –पापा मेरे पैर आ गये तो मैं तो इतना खुश हो गया मुझे लगा की मुझे कोई रत्न मिल गया। जैसे 14 रत्न समुन्द्र से मंथन ऐरावत हाथी निकले उच्चैश्रवा जैसे घोड़े निकले। मेरा रत्न माता और बहिनों आपकी खुशी है आपके परिवार का प्रेम आपके सग्गे सम्बन्धी का आपसी स्नेह, आपके पड़ोस का प्यार बन्धुओं में जब आपसे प्रार्थना करने बातचीत करने आता हूँ तो लगता है ये अपनों से अपनी बात है। ये परायी बात नहीं है। ये घर –गृहस्थी की बात है। परमात्मा के नाते जैसे ऋग्वेद में आज ही सुबह मैंने स्वाध्याय किया। एक ब्रह्मम्। एक ईश्वर है। हम सब उसके अंश हैं।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, ईश्वर का अंश है जो अविनाशी जीव है अर्थात् व्यवहार में क्या करना ? नागपुर की यात्रा जब कुछ समय पहले चल रहीं थी सर्जिकल यात्रा केम्प करना वहाँ तो राधा .ष्ण हॉस्पीटल भाड़े पर लिया गया। अच्छा हॉस्पीटल है और हमारे मालू जी और भी कई सज्जन महानुभाव है आगे बढ़े बोले बाबूजी ये तो नेक काम है, ये तो अच्छा काम है ।

सबसे बड़ा काम है ऑपरेशन सर्जरी टेढ़ा पैर सीधा हो जावे। जैसे हमारे ये आर्टिफिशयल लिम्ब है। ये मान लो अब किसी का पैर कट गया दुर्भाग्य से रेल से कट गया। कईयों के रोज कम से कम से 28 ,30, 32 महानुभाव आपके अपनी संस्था उदयपुर में के। प्रतिदिन पधार जाते है। ये बहुत कम वजन का है आप देख लो। और किन्हीं के तो ऐसा लगाते हैं अभी देखो ये हाथ – पैर अंग– भंग हो गया आर्टिफिशयल लिम्ब लगा दिया। ये तो मोड्यूलर है ये विदेश का ऐसा यदि खरीदा जाये दिल्ली में बड़े–बड़े शोरुम हैं विदेशी संस्थाओं के डेढ़ लाख रुपया, दो लाख रुपया, ढ़ाई लाख रुपया इतना कहा से लावें। गरीब आदमी के तो पसीने छूट जावे भाईसाहब। हाँ पाँच –चार हजार रुपये लेकर के बड़ी मुश्किल से वो भी हो तो और यहाँ तो आते –आते बिल्कुल फ्री। टोटल फ्री और निःशुल्क।

भावों की क्रांति के स्वरुप में भोपाल से पधारी है अभी –अभी कमला जी मोहनानी जी महोदया। उनके सुपुत्र, उनके पौते, उनकी बहू जी कितने अच्छे संस्कार। दो बच्चों के भाग्य का समर्थन कर दिया उन्होंने दो रोते हुए बच्चों को हंसा दिया उन्होनें, दो बच्चों को खड़ा कर दिया लाला ऐसे ये भगवान राजी होते हैं। चित्रकूट के घाट पर भी यहीं बात है और गंगा, दशहरा पर भी यही बात है और दीपावली पर उत्साह की यही बात है, और यहीं होली की तरंगे हैं मन चंग्गा तो कटोती में गंगा। आज ये बात लिख लिजो और बार –बार दोहराते रहना कि मन ने चंगो रखाणों हैं।

सम्पादकीय

संसार में अनेक चमत्कार भरे पड़े हैं। प्रकृति स्वयं एक चमत्कारी शक्ति है। अनेक बार ऐसी–ऐसी प्राकृतिक घटनाएं हो जाती हैं जिन पर विश्वास करना कठिन होता है। ऐसे ही व्यक्तियों में भी बहुत सी चमत्कारी बातें होती हैं। एक कहावत है –'चमत्कार को नमस्कार।' संभवतः इसके कारण ही व्यक्ति चमत्कारों की ओर आकृष्ट हुआ हो, पर चमत्कार प्रारंभ से ही व्यक्ति को प्रभावित करते रहे हैं। तन की शक्ति में जब असीमितता हो तो भी वह चमत्कार सा ही लगता है। ऐसे ही कला व विज्ञान के सुन्दर सम्मिश्रण से अनेक लोग चमत्कारिक प्रदर्शन करते हैं। धर्म के क्षेत्र में भी भक्त चमत्कार के लिये उत्सुक व लालायित रहते हैं। चमत्कारों के नाम पर कई बार ठगी भी होती है। किन्तु सबसे बड़ा चमत्कार है मन का। मानव मन कब किससे बदल जाये, कब, कहाँ लग जाये कहा नहीं जा सकता।

यह पक्का है कि चमत्कार में विश्वास वाला धोखा भी खा सकता है, पर यदि हम किसी सिद्धांत, मान्यता, उद्देश्य या लक्ष्य पर विश्वासपूर्वक आगे बढ़ेंगे तो चमत्कार भी संभव है।

कुछ काव्यमय

साचमत्कार
को नमस्कार है,
लोक मान्यता का विचार है।
चमत्कार हो सत्याधारित,
खोजें, क्या इसका आधार है?
सत्यासत्य खोजकर ही तो,
कहीं किया जा सकता विश्वास।
बिना प्रभावित हुए करें हम,
सत्य प्राप्ति के सहज प्रयास।

- वरदीचन्द राव

इंडियन बैंक ने दी मदद

इंडियन बैंक की ओर से अपने 115 वें स्थापना दिवस पर सामाजिक उत्तरदायित्व (सी.एस.आर) परियोजना के तहत 9 अगस्त को विभिन्न दुर्घटनाओं में अपने हाथ–पांव गंवाने वाले 5 दिव्यांगों को आर्थिक सहयोग प्रदान कर संस्थान मुख्यालय पर कृत्रिम अंग लगवाए। इस दौरान बैंक के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री राजेन्द्र कुमार, उपप्रबन्धक श्री नवीन टांक एवं मुख्य प्रबन्धक श्री अनिल नेगी ने संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों का अवलोकन किया। निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने उनका स्वागत किया। कृत्रिम अंग निर्माण प्रभाग के प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू ने उन्हें कृत्रिम अंग और कैलीपर निर्माण की विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर बैंक के श्री विजय जैन, श्री अरूण कुमार तथा संस्थान के लेखाधिकारी श्री जितेन्द्र गौड़ व श्री संतोष सेनापति भी मौजूद थे।

अपनों से अपनी बात

पल-पल का सदुपयोग

जब हम अपनी उम्र के बारे में सोचें तो ये ध्यान रखें कि हमने कितना समय सदाचार, परमात्मा के ध्यान, धर्म–कर्म के काम में व्यतीत किया है, क्योंकि कायदे से वही हमारी सही उम्र का पैमाना है।

मनुष्य को अपनी उम्र के पल–पल का सही उपयोग करना चाहिए क्योंकि मानव जीवन दुर्लभ है। इसे सार्थक बनाएं और पीछे छोड़ जाएं अपनी यादगार है। हमारी जो उम्र है, उसमें से ज्यादातर समय तो मनुष्य व्यर्थ की बातों में बर्बाद कर देता है। इस सम्बन्ध में मुझे एक कथा प्रसंग का स्मरण भी आ रहा है।

गौतम बुद्ध के एक शिष्य थे। वे बुद्ध के साथ ही रहते थे। स्वभाव से बहुत ही भोले–भाले थे। एक दिन बुद्ध ने सोचा कि चलो आज इस वृद्ध के और सरलमना इंसान से कुछ गहरी बातें करते हैं। बुद्ध ने उस बूढ़े शिष्य से पूछा,

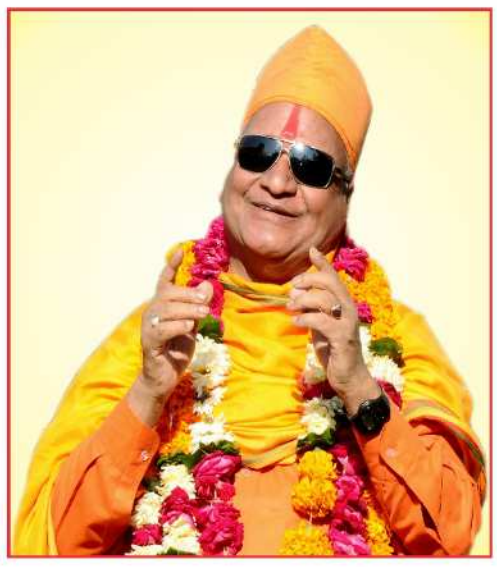

'क्या आयु होगी आपकी?' शिष्य ने उत्तर दिया, 'यही कोई 70 साल।' बुद्ध मुस्कराए और कहा, 'नहीं आप सही उम्र नहीं बता रहे है।'

ये सुनकर शिष्य परेशान हो गया। वह जानता था कि बुद्ध बिना किसी वजह से एक भी शब्द नहीं कहते हैं। और, यदि बुद्ध कह रहे है तो जरूर कोई बात होगी। उसने फिर बुद्ध से कहा, 'मैं अपनी उम्र गलत नहीं बता रहा हूं।' देखिए, मेरे बाल श्वेत हो गए है, दांत गिर गए हैं। मैने पूरा जीवन जिस उम्र के हिसाब से बिताया है, वह यही है, लेकिन आपको क्या लगता है, मेरी उम्र क्या है?'' बुद्ध ने कहा, 'तुम्हारी उम्र एक वर्ष है।' यह बात सुनकर बूढ़ा शिष्य और अधिक परेशान हो गया। उसने कहा, 'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?'

बुद्ध बोले, 'सच तो यह है कि तुमने जो 69 साल दुनियाभर में व्यतीत किए है, वो बेकार हो गए। पिछले वर्ष से जब तुमने धर्म को खोजना शुरू किया, जब तुम ध्यान की ओर बढ़े, तभी से तुम्हें सही अर्थ में जन्म मिला। इसलिए तुम्हारी आयु एक वर्ष मानी जाएगी।' बन्धुओं! बुद्ध का इशारा है कि जब हम अपनी उम्र के बारे में सोचें तो ये ध्यान रखें कि हमने कितना समय सदाचार, परमात्मा के ध्यान और धर्म–कर्म में व्यतीत किया है। कायदे से वही समय हमारी सही उम्र है।

–कैलाश 'मानव'

नई सोच के साथ बनाएं लक्ष्य

अपने जीवन को समझना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। अगर हमने जीवन का महत्व समझ लिया तो यकीन मानिए जिन्दगी सुगम और सफल होने में कोई संदेह नहीं रहेगा। शास्त्रों का अध्ययन करें या ऋषियों– मुनियों को सुने, उन सबका कहना है–'मनुष्य की जिन्दगी पानी के बुलबुले जैसी है। न जाने कब बुलबुला फूट जाए।' यानी कब परलोक का बुलावा आ जाए, किसी को पता नहीं। अगर एक बार हमारी सांसें शरीर से छूट गई तो फिर लौटकर आने वाली नहीं। जीवन क्षणभंगुर है।

इसलिए हमें इसका सदुपयोग करना होगा।

नारायण सेवा संस्थान 23 अक्टूंबर, 1985 से बिना रुके सेवा के पथ पर बढ़ रहा है। दिव्यांगों और पीड़ित मानवता की सेवा करना इसका परम लक्ष्य है। संस्थान दिव्यांगों को सम्पूर्ण पुनर्वास देने का कार्य कर रहा है। 20 वर्षो से दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह के आयोजन करता आ रहा है। सितम्बर माह में 36वां सामूहिक विवाह सम्पन्न हुआ। जिसमें 21 जोड़ों का पाणिग्रहण शाही धूमधाम से हुआ। ऐसे आयोजनों से समाज को नई दिशा मिलती है। जिन दिव्यांगों के सपने साकार हुए उनके विचार सुनने से आंखे नम हो जाती हैं और लगता है कि उनके लिए हमारे प्रयास और तेज होने चाहिए। समाज जिन्हें उपेक्षा भाव से देखता रहा है, वे असल में सामान्यजन से कतई कम नहीं हैं। समय–समय पर उन्होंने इसे साबित भी किया है। टोक्यों में सम्पन्न पैरालम्पिक–2021 में भारत के दिव्यांग युवाओं ने 5 स्वर्ण पदक सहित 19 विभिन्न पदक जीत कर कीर्तिमान स्थापित कर हम सबका ध्यान अपनी ओर खींचा है। ऐसे में सशक्त, समृद्ध भारत और उन्नत समाज बनाने के दिशा में हमें अपनी सोच और दृष्टि को बदलना ही होगा। संस्थान ने समाज कल्याण की योजनाओं को ज्यादा से ज्यादा दिव्यांग एंव जरूरतमंदों तक पहुंचाने के लिए पंचवर्षीय विजन डॉक्यूमेंट तैयार कर दृढ़ता से उस पर कार्य करने का संकल्प भी लिया हैं। यह संकल्प आपश्री के आशीर्वाद और सहयोग के बिना मूर्तरूप नहीं ले पाएगा। आइये, आप भी उसमें सदैव की तरह सहभागी बनें और भारत की आजादी के अमृत महोत्सव पर सेवा पथ की ओर तेजी से आगे बढ़ने की शपथ लें।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

इसी बीच 1995 के अन्त में कैलाश पर एक और वज्रपात हो गया। पिता का साया तो कब से सिर से उठ चुका था, उसे प्राणों से भी अधिक प्यार करने वाली मां भी साथ छोड़कर चली गई। सोहनी के गाल ब्लेडर में पथरी हो गई थी। अहमदाबाद जाकर ऑपरेशन भी कराया मगर उसके प्राण नहीं बच सके। कैलाश के मन को भारी चोट पहुँची।

इस बीच पौष्टिक आहार तथा वस्त्र वितरण का कार्य अत्यन्त सुगमता से चल रहा था क्यूंकि यह व्यय साध्य नहीं था, सारी सामग्री मिल जाती थी, मफत काका ट्रकें भेज देते, गेहूं दान में मिल जाता मगर अस्पताल चलाना ऐसा सुगम कार्य नहीं था। यह अत्यन्त व्यय साध्य था। कैलाश बराबर चिन्तित रहता कि अस्पताल शुरु तो कर दिया है मगर यह चलेगा कैसे।

1996 की बात है। सेवाधाम का प्रथम भवन बन गया था। सौ के करीब अनाथ बच्चे हो गये थे, धनसंग्रह हेतु वह कोंकण क्षेत्र का दौरा कर रहा था। रायगढ़ से छोटी मारुति कार ली, उसमें 4 व्यक्ति बैठकर रत्नागिरि जा रहे थे। भीषण जंगल का इलाका था, चलते चलते रास्ता भटक गये, शाम का धुंधलका छाने लगा था, अंधेरा होने के पहले गंतव्य पर नहीं पहुंचे तो जंगल में हिंसक पशुओं का ग्रास बनने की आशंका सबके मन में घिर आई थी। सही रास्ता नहीं मिल पा रहा तो एक राहगीर से पूछा कि रत्नागिरि के लिये किधर जायें, उसने जो रास्ता बताया उसकी सड़क खराब नजर आ रही थी, ड्राइवर को आशंका थी कि कहीं हम गलत दिशा में तो नहीं जा रहे मगर उस राहगीर की बात पर यकीन करते हुए आगे बढ़ते रहे। जंगल घना होता गया, जंगली पशुओं की आवाजें भी निरन्तर आ रही थी, सब भगवान का स्मरण करते हुए इस कठिन रास्ते के शीघ्र समाप्त होने की प्रार्थना कर रहे थे तभी गाड़ी एक जगह आकर रुक गई। सामने नाला था, इधर–उधर अन्य कोई मार्ग नहीं था, सिवाय वापस पीछे लौटने के अन्य कोई विकल्प भी नहीं था।

गाड़ी पीछे लौटाने की कोशिश की तो रास्ता इतना संकड़ा था कि यह संभव नहीं हो पा रहा था, ज्यादा कोशिश करते तो गाड़ी के नाले में गिरने की संभावना थी। अन्धेरा बढ़ गया था, सबकी धुकधुकी बढ़ गई, तभी एक टोर्च की चुंधियाती रोशनी उनकी आंखों में पड़ी। सब घबरा गये। ज्यूं ही टोर्च बंद हुई और रोशनी बुझी, एक भयावह चेहरे के व्यक्ति को अपने सामने देख सबकी घिग्घी बंध गई।

अंश - 167

समयबद्ध आहार

कालभोजनम् आरोग्य कराणाम्। चरक सहिंता के अनुसार, भोजन का जो समय निर्धारित किया जाए, रोजाना उसी समय पर भोजन ग्रहण किया जाए।

कड़वे के साथ रसायन

करेला, इसके बीज जैसे तत्वों सहित कसैली औषधियां, शरीर में वात बढ़ाते हैं, साथ में रसायन लें।

वसंतकुसुमकर रस

यह औषधि अपने आप में पर्याप्त है, क्योंकि यह रोग के तीनों स्तरों पर शरीर को आरोग्य देती है। इसे स्वर्ण भस्म, मोती, अभ्रक भस्म, प्रवाल, लौह भस्म, रस सिंदूर, नाग भस्म जैसे तत्वों को साथ मिलाकर तैयार किया जाता है।

दवाओं के साथ रसायन भी लें

इस रोग में सिर्फ दवाइयां काम नहीं करेगी, बल्कि इनके साथ रसायन भी अवश्य लें। शिलाजीत अपने आप में पर्याप्त इलाज है जो तत्वों को संतुलन करता है। जामुन, बला के बीज, कलौंजी, चन्द्रप्रभावटी, शिवागुटिका जैसे रसायन उपयोगी है।

त्रिफला

यह पाचन ठीक रखे के साथ डायबिटीज कंट्रोल रखता है। एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर यह मिश्रण रोग–प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाता है।

प्रारंभिक अवस्था में .....

प्रारंभिक अवस्था वाले रोगियों को दिनचर्या में योग, प्राणायाम आदि शामिल करने चाहिए। ताजे फल व सलाद ले सकते है।

मोह–क्रोध से भी बचें

तनाव व चिंता के साथ ही लोभ, मोह, क्रोध जैसे कारक इस रोग को बढ़ाते हैं। शांतचित्त रहना भी इसमें औषधि का काम करता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

ये जिह्वा प्रभु की है, मन प्रभु का, हाँ, ये प्राण वायु (श्वास) प्रभु का, एक एक श्वास ठाकुर का, राम जी भगवान वनवास पधारे। सीता माता लक्ष्मण जी के साथ भरत जी को ननिहाल से लौट आते ही मालूम हुआ। बहुत बुरा हुआ। हे! माता कैकयी। आपने अच्छा नहीं किया। अरे! मंथरा तूने घर तुड़वा दिया। मैं आप सब के साथ चित्रकूट चलना चाहता हूँ। भगवान को मना के लाएंगे, और भरत जी ने कहा था–

सिरबल जाऊं उचित असमोरा,
सेवक धर्म परम कठोरा।

आँखों में आँसू आ गए। कथा सुनाते हुए। यज्ञ का प्रवाह था, गुरुदेव की कृपा थी, छोटे भाई की आँखों में जल भर आया। दौड़ा दौड़ा आया। बड़े भाई के चरणों में गिर पड़ा। भैया, भैया भैया क्षमा चाहता हूँ। भैया आप मेरे राम हो। मैं आप का भरत नहीं बन सका। बडे भाई ने भी गले लगा लिया।

आँखों में आँसू, बोले आज ही अभी 1–2 घंटे के अंदर, भोजन बाद में करेंगे, यज्ञ के बाद में भोजन करने के पहले पहले अपने सारे मुकदमों को उठा लेंगे। कोई मुकदमा नहीं करना– भैया। तुम चाहोगे वैसा हो जाएगा। उनकी धर्मपत्नी भी रो रही है, उनके बच्चों की आँखों में आँसू आ गए। ये ही धरम तंत्र से लोक शिक्षण। ये वेदों की ऋचा है, उपनिषदों की कथाएं, ये प्रेम महाभारत के एक लाख श्लोक, रामचरित मानस के सप्तकांड

वर्णानामर्थसंघानां, रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ, वन्दे वाणीविनायकौ।।

ये गीता जी के 18 अध्याय। व्यवहार में धर्म उतर जाए। शुद्ध वातावरण गायत्री माता ने बना दिया। सब मुकदमे समापन के पत्र लिख दिए। दोनों ने दस्तखत कर दिए। बड़े भाई ने कहा मेरे पास चलो। मेरे घर चलो– भैया। पहले भी यज्ञ करते थे– भैया। कोटड़ा में लगा जीवन सफल हो गया। आज का यज्ञ सफल हो गया। आए, लौट के आए। बहुत अच्छे अच्छे महानुभाव बहुत अच्छा 1983 आ गया। कमला जी का पूरा सहयोग मिलता रहा।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 294 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से
संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।
संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023